

संक्षिप्त समाचार

रनजीनियर्स ग्रुप ने इंस्पेक्टर आनंद मिश्रा का किया स्वागत

पूर्वी सिंहभूम। टाटा स्टील की ओर से आयोजित हाफ मैरान दौड़ में शानदार प्रदर्शन करने पर इंस्पेक्टर सह साक्षी थाना प्रभारी आनंद मिश्रा का शहर के धावकों का चर्चित ग्रुप रनजीनियर्स ग्रुप ने मंगलवार को स्वागत किया।

इस दौरान आनंद मिश्रा को अंग वस्त्र भैंटकर तथा पुष्प का माला पहनाकर स्वागत किया गया। स्वागत करने वालों में जमशेदपुर रनजीनियर्स ग्रुप के दीपक कुमार, अरुपा नंद महतो, इमतियाज अली, प्रभाकर कुमार, धर्मेन्द्र कुमार, अरुणजय कुमार, अधिकारी पाण्डेय शामिल थे।

मोके पर दीपक कुमार ने कहा कि आनंद मिश्रा न सिक्के पुलिसकर्मियों के लिए प्रेरणा के लिए स्तोत्र हैं बल्कि आमजनों के लिए भी एक अच्छा उदाहरण है जो स्वास्थ्य के प्रति हैं वह जारी है।

उन्होंने कहा कि मिश्रा अनुसारित रखकर उप्र के इस पड़ाव पर भी जिस ऊंची के साथ मैरान में उदार प्रदर्शन करते हैं वह काबिल तरीके हैं।

मिश्रा अंतर्राष्ट्रीय स्तर की प्रतिष्ठित मुंबई पैरानथ में भी उदार प्रदर्शन कर सकते थे और आकर्षित करने में कामयाब हुए थे।

सड़क पर गिटी लोड हाइवा में लगी भीषण

पूर्वी सिंहभूम। पूर्वी सिंहभूम जिला स्थित पोटका थाना क्षेत्र के सामाजीक आग लग गई, जिससे देखते ही देखते पूरा वाहन आग की चपेट में आ गया। आग इतनी भीषण थी कि कुछ ही मिनटों में हाइवा पूरी तरह जलकर खाक हो गया। घटना के वाहन चालक किसी तरह कूदकर अपनी जान बचाने में सफल रहा।

स्थानीय लोगों ने आग की लाई उठाई देखते ही देखते पूरा वाहन आग की चपेट में आ गया। आग इतनी भीषण थी कि कुछ ही मिनटों में हाइवा पूरी तरह जलकर खाक हो गया।

आग लगने के सही करारों का पाता लगाया जा रहा है। घटना में किसी प्रकार की जानलिन नहीं हुई है, यह राहत की बात है।

बंग बंधु संस्था की जिला कमेटी घोषित, अध्यक्ष बने प्रकाश मुख्यर्जी

पूर्वी सिंहभूम। झारखंड के सभी बांगला भाषियों को संगठित करने के द्वेष्य से स्थायी बंग बंधु की एक महत्वपूर्ण बैठक मंगलवार को बिट्टुपुर स्थित चैंबर भवन प्रेसार्ह में आयोजित की गई।

बैठक की अध्यक्षता केंद्रीय अध्यक्ष अर्पण गुहा व महासचिव उत्तम गुहा के अध्यक्षता संयुक्त हुआ। जिसमें सर्वसमर्थि से पूर्ण सिंहभूम जिला कमेटी का गठन किया गया, जिसमें पेटेन के रूप में रीबन्डाय दास (बहरागोड़ा) और चितो रंजन दास (पोटका) को गठन किया गया। साथ ही एडवाइजर सुबोध गोराई, अध्यक्ष प्रकाश मुख्यर्जी, कार्यकारी अध्यक्ष एस.के. मासित (बहरागोड़ा), देवजीत सरकार, तोतन दत्ता, महासचिव बाबूलाल चक्रवर्ती, कोषाराष्ट्र सौरव चटर्जी और सह-कोषाराष्ट्र प्रणव बराट सहित अन्य पदाधिकारियों का चयन किया गया।

इस आयोजन का उद्देश्य बांगला भाषा, सास्कृतिक धरोहर, लाकलता और पारंपरिक कलाओं को एक मंच प्रदान करना है, जहां राज्य के विभिन्न जिलों से आए कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन करें।

बैठक में शुभकांत धोनी, दंडनी धोनी, अपर्णा गुहा, उत्तम गुहा, अमित मैती, अशोक दत्ता, सुभाष सिंह रोय, बिनोद दे, उत्तान मुख्यर्जी, प्रणव सरकार सहित कई समानित सदस्य उपस्थित थे।

सीसीटीवी कैमरे से लैस होगा रामगढ़ थाना, होगी सटीक निगरानी

रामगढ़। शहर में चौक-चौराहों और दुकानों के साथ-साथ थाना परिसर भी सीसीटीवी कैमरे से लैस होगा। इससे सुकूप की सटीक निगरानी हो पाएगी। शहर में आपाराधिक गतिविधियों पर नजर रखने के लिए एसपी

अंजय कुमार की पहल पर कई स्थानों पर बेहतर कालिटी के सीसीटीवी कैमरे के अंदर और बाहर भी कैमरे में सुकूप मार्ग को फोकस कर लगाए गए हैं। बैंक परसर के अंदर और बाहर भी कैमरे में सुकूप मार्ग को फोकस कर लगाए गए हैं। अनेक वाले दिनों सरद थाना परिसर में सीसीटीवी कैमरे

लगाए गए हैं। वर्तमान में चौक-चौराहों ने एसपी को प्रतिलिपि लिया है। वर्तमान में अंदर और बाहर के चौक-चौराहों के बीच प्रभारी लगाए गए हैं। अनेक वाले दिनों सरद थाना परिसर में सीसीटीवी कैमरे

लगाए गए हैं। वर्तमान में अंदर और बाहर पूरी निगरानी खो जाएगी। इससे लेकर मंगलवार को थाना प्रभारी नवीन प्रकाश पांडे ने एसपी को प्रतिलिपि लिया है। वर्तमान में थाना परिसर के अंदर और बाहर पूरी निगरानी खो जाएगी। वर्तमान में चौक-चौराहों के बीच प्रभारी लगाए गए हैं। अनेक वाले दिनों सरद थाना परिसर में सीसीटीवी कैमरे

लगाए गए हैं। इससे थाना के अंदर और बाहर पूरी निगरानी खो जाएगी। वर्तमान में चौक-चौराहों के बीच प्रभारी लगाए गए हैं। अनेक वाले दिनों सरद थाना परिसर में सीसीटीवी कैमरे

लगाए गए हैं। इससे थाना के अंदर और बाहर पूरी निगरानी खो जाएगी। वर्तमान में चौक-चौराहों के बीच प्रभारी लगाए गए हैं। अनेक वाले दिनों सरद थाना परिसर में सीसीटीवी कैमरे

लगाए गए हैं। इससे थाना के अंदर और बाहर पूरी निगरानी खो जाएगी। वर्तमान में चौक-चौराहों के बीच प्रभारी लगाए गए हैं। अनेक वाले दिनों सरद थाना परिसर में सीसीटीवी कैमरे

लगाए गए हैं। इससे थाना के अंदर और बाहर पूरी निगरानी खो जाएगी। वर्तमान में चौक-चौराहों के बीच प्रभारी लगाए गए हैं। अनेक वाले दिनों सरद थाना परिसर में सीसीटीवी कैमरे

लगाए गए हैं। इससे थाना के अंदर और बाहर पूरी निगरानी खो जाएगी। वर्तमान में चौक-चौराहों के बीच प्रभारी लगाए गए हैं। अनेक वाले दिनों सरद थाना परिसर में सीसीटीवी कैमरे

लगाए गए हैं। इससे थाना के अंदर और बाहर पूरी निगरानी खो जाएगी। वर्तमान में चौक-चौराहों के बीच प्रभारी लगाए गए हैं। अनेक वाले दिनों सरद थाना परिसर में सीसीटीवी कैमरे

लगाए गए हैं। इससे थाना के अंदर और बाहर पूरी निगरानी खो जाएगी। वर्तमान में चौक-चौराहों के बीच प्रभारी लगाए गए हैं। अनेक वाले दिनों सरद थाना परिसर में सीसीटीवी कैमरे

लगाए गए हैं। इससे थाना के अंदर और बाहर पूरी निगरानी खो जाएगी। वर्तमान में चौक-चौराहों के बीच प्रभारी लगाए गए हैं। अनेक वाले दिनों सरद थाना परिसर में सीसीटीवी कैमरे

लगाए गए हैं। इससे थाना के अंदर और बाहर पूरी निगरानी खो जाएगी। वर्तमान में चौक-चौराहों के बीच प्रभारी लगाए गए हैं। अनेक वाले दिनों सरद थाना परिसर में सीसीटीवी कैमरे

लगाए गए हैं। इससे थाना के अंदर और बाहर पूरी निगरानी खो जाएगी। वर्तमान में चौक-चौराहों के बीच प्रभारी लगाए गए हैं। अनेक वाले दिनों सरद थाना परिसर में सीसीटीवी कैमरे

लगाए गए हैं। इससे थाना के अंदर और बाहर पूरी निगरानी खो जाएगी। वर्तमान में चौक-चौराहों के बीच प्रभारी लगाए गए हैं। अनेक वाले दिनों सरद थाना परिसर में सीसीटीवी कैमरे

लगाए गए हैं। इससे थाना के अंदर और बाहर पूरी निगरानी खो जाएगी। वर्तमान में चौक-चौराहों के बीच प्रभारी लगाए गए हैं। अनेक वाले दिनों सरद थाना परिसर में सीसीटीवी कैमरे

लगाए गए हैं। इससे थाना के अंदर और बाहर पूरी निगरानी खो जाएगी। वर्तमान में चौक-चौराहों के बीच प्रभारी लगाए गए हैं। अनेक वाले दिनों सरद थाना परिसर में सीसीटीवी कैमरे

लगाए गए हैं। इससे थाना के अंदर और बाहर पूरी निगरानी खो जाएगी। वर्तमान में चौक-चौराहों के बीच प्रभारी लगाए गए हैं। अनेक वाले दिनों सरद थाना परिसर में सीसीटीवी कैमरे

लगाए गए हैं। इससे थाना के अंदर और बाहर पूरी निगरानी खो जाएगी। वर्तमान में चौक-चौराहों के बीच प्रभारी लगाए गए हैं। अनेक वाले दिनों सरद थाना परिसर में सीसीटीवी कैमरे

लगाए गए हैं। इससे थाना के अंदर और बाहर पूरी निगरानी खो जाएगी। वर्तमान में चौक-चौराहों के बीच प्रभारी लगाए गए हैं। अनेक वाले दिनों सरद थाना परिसर में सीसीटीवी कैमरे

लगाए गए हैं। इससे थाना के अंदर और बाहर पूरी निगरानी खो जाएगी। वर्तमान में चौक-चौराहों के बीच प्रभारी लगाए गए हैं। अनेक वाले दिनों सरद थाना परिसर में सीसीटीवी कैमरे

लगाए गए हैं। इससे थाना के अंदर और बाहर पूरी निगरानी खो जाएगी। वर्तमान में चौक-चौराहों के बीच प्रभारी लगाए गए हैं। अनेक वाले दिनों सरद थाना परिसर में सीसीटीवी कैमरे

लगाए गए हैं। इससे थाना के अंदर और बाहर पूरी निगरानी खो जाएगी। वर्तमान में चौक-चौराहों के बीच प्रभारी लगाए गए हैं। अनेक वाले दिनों सरद थान

मुखर राष्ट्रवाद

Mukhar Raashtravaad : Think Bold. Speak Bold. Rise and Save the Nation

असफलता पराजय नहीं है
-यह समझना आवश्यक है

आज पचपन वर्ष की उम्र पर करने के बाद यह बात जितनी

स्पष्ट

और गरी

समझ

में आती

है, कारो

उतनी ही

बचपन में

समझ आ

पाती। तब

स्थाय

टोकरें कम लगायीं, राते जल्दी बतें

और सफर थोड़ा आसन होता। पर

सच यह भी है कि समझ वहीं आती

है, जहाँ जीवन हमें सिखाना चाहता

है, और यहीं सहस्र सफलता

की पढ़ी शर्त है।

थोड़ा एडिसन का वह प्रसिद्ध

बाबू, "मैं असफल नहीं हुआ, मैंने

सिर्फ़ हजार ऐसे तरीके खोजे जो काम

नहीं करते", केवल एक कथन नहीं,

बल्कि जीवन जीने की कला है। यहीं

दृष्टिकोण गांधी, विकानंद, अब्दुल

कलाम, स्टिव जॉब्स जैसे लोगों में

थाएँ; और यहीं दृष्टि उड़े असंभव के

पार ले गए हैं।

जीवन हमें बाब-बाबर गिराता है,

ताकि हम बाब-बाबर उठाना सीधे

असफलता धैर्य, विश्वास, आपसील

और दृढ़ निश्चय का प्रीरण लें। वह

हमें भरत से जमजूत नहीं है, दृष्टि

सफलता ही और हमें वह बनाने में

मदद करती है जिसके बाये हम हैं।

हम सफलता पर तालियाँ बजाते

हैं, पर असफलताओं को अमान,

भय और निश्चय के साथ जोड़कर

देखते हैं। जबकि वास्तविकता पह तै

कि Failure is not defeat -यह

सिर्फ़ संकेत है कि अपी रस्ता परा

नहीं हुआ, कोशिशें अशूरी हैं और

अनुभवों को और गहरा होना है।

दुनिया के महान वैज्ञानिक, नेता,

विचारक और उद्यमी आगे पहनी या

दस्तीय असफलता के बाद रुक जाते,

तो इतिहास अधूरा हो जाता।

असफलता किसी व्यक्ति

की क्षमता का नहीं, बल्कि उसके

प्रयासों का पर्याप्त होती है। पर्याप्त में

असफलता का अर्थ यह होता कि छात्र

अंयोग है, व्यापार में यथा आका

मतलब यह नहीं कि व्यापारी अपनाम

है, और जीवन के किसी क्षेत्र में ठेकर

खाने से व्यक्ति कमज़ोर नहीं होता।

असफलता बस यह बताती है कि चुना

हुआ तो राहिक पर्याप्त नहीं है। इसीपैर

असफलताओं का डर

सोची है, मौजूद का अन्त नहीं। आज

के समय में समाज ने असफलता को

एक कलंक की तरह बना दिया है।

बच्चे, युवा, खिलाड़ी, कलाकार—

सभी को अन्तीम नहीं होता जब उन्होंने

के शिकायत हैं कि असफल होने का

मतलब है हार जाना। पर वास्तव में

हार वही मानता है जो प्रयास छोड़

देखता है।

इसी अभियान के निहितार्थ, राष्ट्रीय मुख्यधारा दैनिक 'मुखर राष्ट्रवाद'

एक स्थाई स्तर पराम्परा कर रहा है। प्रबुद्ध राष्ट्रवादियों

से अनुरोध है कि आपके सम्बंधित आत्मेत्व, विचार और

टिप्पणियां 'मुखर राष्ट्रवाद' में प्रकाशनार्थी भेजें।

बीएलओ पर काम का बोझ

बिहार में हुए एसआईआर के दोरान सुधार कोर्ट ने इस प्रकार्या

में सुधार के तर्फ़ निर्देश दिया। अब 12 राज्यों में जारी एसआईआर

में उन उपर्योगों को लागू किया गया है। इससे बीएलओजे पर

काम का बोझ बढ़ गया है। मतदाता सुधी के दिशों पुनर्निक्षण

(एसआईआर) के लीच तर्फ़ वृद्ध वृद्ध लेवल ऑफिसर्स (बीएलओजे) की

मौत ने पहले से ही दिशादित इस प्रक्रिया में नया आयाम जोड़ दिया है। इसके बाद स्थानीय स्तर पर उपर्योगों को अंत नहीं, एक अवसर तक राज्यों की तरह देखा जाए। हार जाने पर उठाना सीधे खुद के लिए, अपने उपर्योग को बढ़ावा देने की जाती है। इसके बाद राष्ट्रीय मुख्यधारा बनने वाली तो इसके लिए अनिवार्य होता है कि एक राज्यांतर्क विचारक जो आत्मेत्व के लिए निर्दिष्ट नियम जोड़ देता है। इसके बाद उपर्योगों को अंत नहीं, एक अवसर तक राज्यों की तरह देखा जाए। हार जाने पर उठाना सीधे खुद के लिए, अपने उपर्योग को बढ़ावा देने की जाती है। इसके बाद राष्ट्रीय मुख्यधारा बनने वाली तो इसके लिए अनिवार्य होता है कि एक राज्यांतर्क विचारक जो आत्मेत्व के लिए नियम जोड़ देता है। इसके बाद उपर्योगों को अंत नहीं, एक अवसर तक राज्यों की तरह देखा जाए। हार जाने पर उठाना सीधे खुद के लिए, अपने उपर्योग को बढ़ावा देने की जाती है। इसके बाद राष्ट्रीय मुख्यधारा बनने वाली तो इसके लिए अनिवार्य होता है कि एक राज्यांतर्क विचारक जो आत्मेत्व के लिए नियम जोड़ देता है। इसके बाद उपर्योगों को अंत नहीं, एक अवसर तक राज्यों की तरह देखा जाए। हार जाने पर उठाना सीधे खुद के लिए, अपने उपर्योग को बढ़ावा देने की जाती है। इसके बाद राष्ट्रीय मुख्यधारा बनने वाली तो इसके लिए अनिवार्य होता है कि एक राज्यांतर्क विचारक जो आत्मेत्व के लिए नियम जोड़ देता है। इसके बाद उपर्योगों को अंत नहीं, एक अवसर तक राज्यों की तरह देखा जाए। हार जाने पर उठाना सीधे खुद के लिए, अपने उपर्योग को बढ़ावा देने की जाती है। इसके बाद राष्ट्रीय मुख्यधारा बनने वाली तो इसके लिए अनिवार्य होता है कि एक राज्यांतर्क विचारक जो आत्मेत्व के लिए नियम जोड़ देता है। इसके बाद उपर्योगों को अंत नहीं, एक अवसर तक राज्यों की तरह देखा जाए। हार जाने पर उठाना सीधे खुद के लिए, अपने उपर्योग को बढ़ावा देने की जाती है। इसके बाद राष्ट्रीय मुख्यधारा बनने वाली तो इसके लिए अनिवार्य होता है कि एक राज्यांतर्क विचारक जो आत्मेत्व के लिए नियम जोड़ देता है। इसके बाद उपर्योगों को अंत नहीं, एक अवसर तक राज्यों की तरह देखा जाए। हार जाने पर उठाना सीधे खुद के लिए, अपने उपर्योग को बढ़ावा देने की जाती है। इसके बाद राष्ट्रीय मुख्यधारा बनने वाली तो इसके लिए अनिवार्य होता है कि एक राज्यांतर्क विचारक जो आत्मेत्व के लिए नियम जोड़ देता है। इसके बाद उपर्योगों को अंत नहीं, एक अवसर तक राज्यों की तरह देखा जाए। हार जाने पर उठाना सीधे खुद के लिए, अपने उपर्योग को बढ़ावा देने की जाती है। इसके बाद राष्ट्रीय मुख्यधारा बनने वाली तो इसके लिए अनिवार्य होता है कि एक राज्यांतर्क विचारक जो आत्मेत्व के लिए नियम जोड़ देता है। इसके बाद उपर्योगों को अंत नहीं, एक अवसर तक राज्यों की तरह देखा जाए। हार जाने पर उठाना सीधे खुद के लिए, अपने उपर्योग को बढ़ावा देने की जाती है। इसके बाद राष्ट्रीय मुख्यधारा बनने वाली तो इसके लिए अनिवार्य होता है कि एक राज्यांतर्क विचारक जो आत्मेत्व के लिए नियम जोड़ देता है। इसके बाद उपर्योगों को अंत नहीं, एक अवसर तक राज्यों की तरह देखा जाए। हार जाने पर उठाना सीधे खुद के लिए, अपने उपर्योग को बढ़ावा देने की जाती है। इसके बाद राष्ट्रीय मुख्यधारा बनने वाली तो इसके लिए अनिवार्य होता है कि एक राज्यांतर्क विचारक जो आत्मेत्व के लिए नियम जोड़ देता है। इसके बाद उपर्योगों को अंत नहीं, एक अवसर तक राज्यों की तरह देखा जाए। हार जाने पर उठाना सीधे खुद के लिए, अपने उपर्योग को बढ़ावा देने की जाती है। इसके बाद राष्ट्रीय मुख्यधारा बनने वाली तो इसके लिए अनिवार्य होता है कि एक राज्यांतर्क विचारक जो आत्मेत्व के लिए नियम जोड़ देता है। इसके बाद उपर्योगों को अंत नहीं, एक अवसर तक राज्यों की तरह देखा जाए। हार जाने पर उठाना सीधे खुद के लिए, अपने उपर्योग को बढ़ावा देने की जाती है। इसके बाद राष्ट्रीय मुख्यधारा बनने वाली तो इसके लिए अनिवार्य होता है कि एक राज्यांतर्क विचारक जो आत्मेत्व के लिए नियम जोड़ देता है।

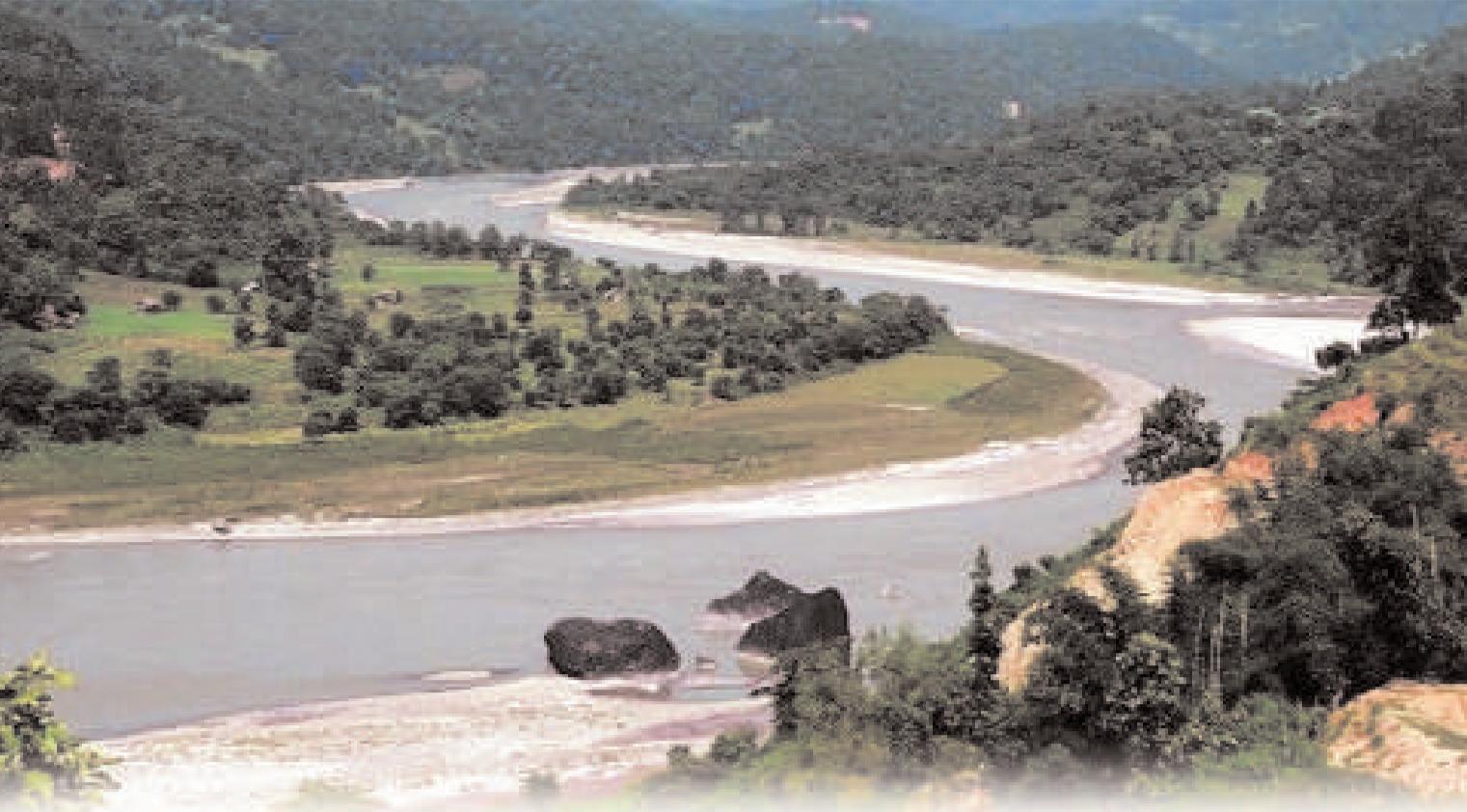


यूरोपीय कंपनी पवन चक्रियों को सुंदर घरों में बदल रही है

यूरोप की बैटनपॉल और सुपरयूज नामक कंपनी ने पुरानी पवन चक्रों के जैसेल को छोटे-छोटे घरों में बदल दिया है। दरअसल जैसेल पवन चक्रों का यह हिस्सा होता है, जहां कई गियर व उपकरण रखे होते हैं। हाल ही में ऑस्ट्रिया के गोल्स विंड फॉम्स की एक पवन चक्रों को घर में बदला गया है। ये पवन चक्रों 20 सालों से काम कर रही थीं। घर को आइंडब्ल्यून में डक डिजाइन बीक 2024 में प्रदर्शित किया जा रहा है। ये घर 13 फीट चौड़ा, 32 फीट लंबा और 10 फीट ऊंचा है। इस घर के अंदर एक बाथरूम, किचन और सोने-बैठने के लिए पर्सनल जगह है। घर में लगा सामान पुरानी चीजों से बनाया गया है। यहां तक कि खाने की भेज भी एक पुरानी पवन चक्रों के पाखे से बनाई गई है। घर की छत पर सोलर पैनल लगे हैं, जिनसे 1800 वांट तक की बिजली पैदा होती है, जो पूरे घर के संचालन के लिए काफी है। इसमें सोर ऊंजों से पानी गरम करने का सिस्टम और बाहर इलेक्ट्रिक गाड़ी चार्ज करने का पॉइंट है।

घरों की कमी की समस्या को दूर करेंगे ये घर

सुपरयूज कंपनी के जो सी ट्रीमर कहते इस तरह के घर बनाने से पुरानी पवन चक्रियों का अच्छा इस्तेमाल हो सकता है। दुनिया में हजारों पवन चक्रियां ऐसी हैं, जो अब पुरानी हो रही हैं। इस छोटे घर का विचार बताता है कि इन पुरानी पवन चक्रों को नए तरीके से कैसे काम में लाया जा सकता है। यह एक नई सोच है जो छोटे घरों में रहने और पुरानी चीजों के दोबारा इस्तेमाल को जोड़ती है। यह भविष्य में घर बनाने का एक नया और अच्छा तरीका हो सकता है। घरों की कमी को इस तरह के इनोवेटिव घरों की मदद से पूरा किया जा सकता है।



हर साल बढ़ती जा रही माउंट एवरेस्ट की ऊंचाई

दो नदियां हैं इसके लिए जिम्मेदार

दुनिया की सबसे ऊंची चोटी माउंट एवरेस्ट साल दर साल और ऊंची होती जा रही है। तिब्बत में 'चोमोलुग्मा' और नेपाली में 'सागरमाथा' के नाम से मशहूर माउंट एवरेस्ट करीब 5 करोड़ साल पहले तब बना शुरू हुआ था, जब भारतीय उपमहाद्वीप यूरोशियन टेक्टोनिक प्लेट से टकराया था। विशेषज्ञों का कहना है कि अब इस चोटी की ऊंचाई और बढ़ती जा रही है।

कितनी बढ़ गई एवरेस्ट की ऊंचाई

माउंट एवरेस्ट 8,849 मीटर (29,032 फीट) ऊंचा है।

आसान उदाहरण से समझिये

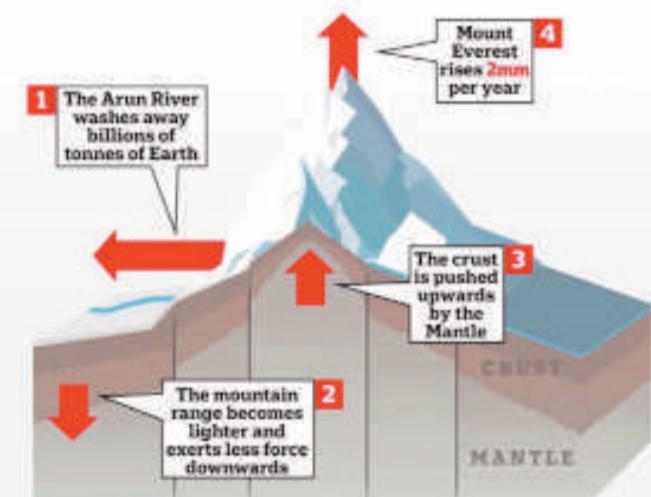
जैसे ही अरुण नदी, कोसी नदी प्राणी का हिस्सा बनी, दोनों और अधिक कटाव होने लगा। पिछली कई सदी में अरुण नदी ने अपने किनारों से अरबों टन मिट्टी का बहा दिया, जिससे एक बड़ी चोटी बन गई। मिट्टी के कटाव से आसपास की जमीन ऊपर उठ गई, जिसे आइसोस्टेटिक रिबाउंड कहते हैं। भू-वैज्ञानिक दाढ़ कहते हैं कि जब कोई भारी चोटी जैसे कि बर्फ का बड़ा टुकड़ा या ऐसी हुई घटान, पृथ्वी की पापड़ी पर होती है, तो उसके नीचे की जमीन धीरे-धीरे प्रतिक्रिया में ऊपर उठती है, ठीक वैसे ही जैसे साल उत्तरने पर वाह पानी में ऊपर उठती है। एवरेस्ट के साथ ही यही हुआ।

पर्वतारोहियों को क्या नुकसान

माउंट एवरेस्ट के आसपास हो रहे

'आइसोस्टेटिक रिबाउंड' ने हिमालयी की दूसरी चोटियों को भी प्रभावित किया है। जैसे लोस्स और माकालू जौ क्रमशः दुनिया की चौथी और पांचवीं सबसे ऊंची चोटियों हैं, शोधकर्ताओं का मानना है कि माउंट मकालू जौ अरुण नदी के सबसे करीब है, उसके चलते यह चोटी और ऊंची हो सकती है। द गर्जियन के अनुसार, दाई ने कहा, चोटियों की ऊंचाई अनिश्चित काल तक नहीं बढ़ती रहेगी। जब नदी प्राणी एक सुरुति स्थिति में पहुंच जाएगी तो चीजें ठीक हो जाएंगी। शोधकर्ता कहते हैं कि सबसे बड़ा प्रभाव उन पर्वतारोहियों पर पड़ेगा जिन्हें एवरेस्ट की चोटी पर पहुंचने के लिए 20 मीटर या उससे अधिक की चढ़ाई करनी होगी। यह खर्चीला, थकाऊ और पहले के मुकाबले ज्यादा जानलेवा होगा।

MOUNT EVEREST IS GETTING TALLER BY THE DAY



30 सितंबर को नेचर जियोसाइंस पत्रिका में प्रकाशित एक स्टडी के मुताबिक पिछले 89,000 वर्षों में माउंट एवरेस्ट की ऊंचाई 15 से 50 मीटर तक बढ़ी है। रस्टडी में कहा गया है कि माउंट एवरेस्ट की ऊंचाई बढ़ने की प्रक्रिया अभी भी जारी है, हर साल एवरेस्ट की ऊंचाई लगभग 4 मिलीमीटर बढ़ रही है। इस स्टडी को को-अॉथर और वैज्ञानिक और लोकों के लिए उपलब्ध कराया गया है। इस स्टडी को को-अॉथर साइंसेज के पीएचडी छात्रों द्वारा एवरेस्ट की ऊंचाई के बढ़ने की विवरणीय विवरणों के लिए उपलब्ध कराया गया है।

क्यों बढ़ रही एवरेस्ट की ऊंचाई?

नेपाल और चीन के बैर्डर पर स्थित माउंट एवरेस्ट की ऊंचाई बढ़ने की सबसे बड़ी वज्र नदियों के प्रवाह में बदलाव है। लगभग 89,000 साल पहले, हिमालय में कोसी नदी ने अपनी सहायक नदी अरुण नदी के एक हिस्से पर कब्जा कर लिया, जो आज एवरेस्ट के उत्तर में स्थित है। स्टडी के मुताबिक रिवर कैप्चर एक दुर्लभ घटना है। ऐसा तब होता है जब एक नदी अपना मार्ग बदलती है और दूसरी नदी से जा मिलती है या उसके चारों से आ जाती है।

कैसे नदी इसके लिए जिम्मेदार

शोधकर्ताओं का कहना है कि जब दोनों नदियां आपस में मिल गईं, तो एवरेस्ट के पास नदी का कटाव बढ़ गया, जिससे भारी मात्रा में दृश्यने और मिट्टी बह गई। इससे अरुण नदी चोटी का निर्माण हुआ। अध्ययन के लेखकों में से एक दाई कहते हैं कि एवरेस्ट क्षेत्र में नदियों की एक दिवावस्य प्राणी है। ऊपर की ओर बहने वाली अरुण नदी में भिन्न जाती है, जिससे इसकी ऊंचाई कम हो जाती है। नदियों की प्राणी में यह बदलाव एवरेस्ट की अत्यधिक ऊंचाई के लिए जिम्मेदार है।

दुनिया की सबसे ऊंची चोटी माउंट एवरेस्ट की ऊंचाई हर साल कीबी 2 मिलीमीटर तक बढ़ रही है। यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ लंदन की शोधकर्ताओं की एसर्च के मुताबिक माउंट एवरेस्ट की ऊंचाई बढ़ने का कारण 75 किलोमीटर दूर दिथरे पर्यावरण नदी का बेसिन है। दरअसल इसके एवरेस्ट के आधार पर चूटाने और निट्रो कट रही है, इस वजह से एवरेस्ट के आधार के अलावा चोटी वाली अरुण नदी में बढ़ने की ओर बहती है। ये नदी नदी का नेटवर्क पहाड़ को बढ़ाने में मदद कर रही है। ये नदी हिमालय से होकर गुजरती है। इसके परिणामस्वरूप एवरेस्ट इतने सालों में कीबी 15-50 मीटर तक ऊंचा हो गया है। इस प्रक्रिया को आइसोस्टेटिक रिबाउंड नाम दिया है। अलग नदी का नेटवर्क पहाड़ को बढ़ाने में बढ़ाने की ओर बहती है। ये नदी हिमालय से होकर गुजरती है।

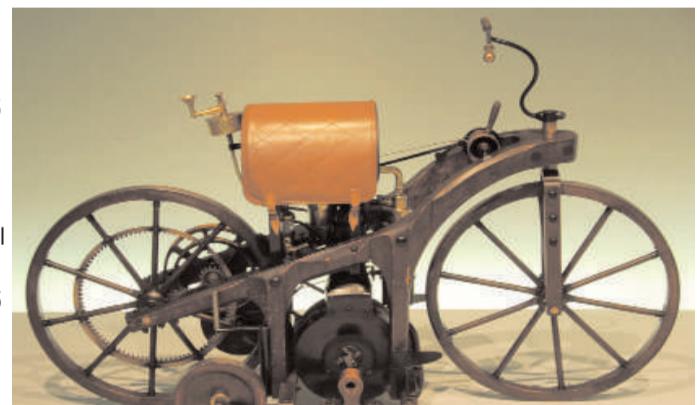
एवरेस्ट के साथ ये चोटियों भी बढ़ रहीं

नेचर जियोसाइंस में प्रकाशित शोध में कहा गया है कि ऊपर की ओर धकेलने वाला यह बल एवरेस्ट और दुनिया की चौथी और पांचवीं सबसे ऊंची चोटियों, लोस्स और माकालू समेत अन्य पड़ोसी चोटियों के ऊपर की ओर बहा रहा है। बीबीसी ने अपनी रिपोर्ट में अध्ययन के सह लेखकों द्वांते में यैश्यू फॉन्टेक के हवाले से बताया है कि एवरेस्ट पर्यावरण और उसकी पड़ोसी चोटियों बढ़ रही हैं, क्योंकि आइसोस्टेटिक रिबाउंड उन्हें कारब्र से कम होने की तुलना में तेजी से ऊपर उठा रहा है। उन्होंने अपने कहा, हम जीपीएस की मदद से उठाए हैं (एवरेस्ट) प्रति वर्ष लगभग दो मिलीमीटर बढ़ाते हुए देख सकते हैं और अब हमें इस बाद की ओर बहते हुए समझते हैं कि ऐसा वर्षों हो रहा है। अध्ययन में सामिल न होने वाले कुछ भूवैज्ञानिकों ने कहा कि यह सिद्धांत विश्वसनीय है लेकिन शोध में अभी भी बहुत कुछ ऐसा है जो अनिश्चित है।

मर्सिडीज के संस्थापक ने बनाई थी दुनिया की पहली मोटरसाइकिल

जमन इंजीनियर गॉटलिब डेमलर ने 10 नवंबर 1885 को दुनिया की पहली मोटरसाइकिल लॉन्च की थी। इस बाइक का नाम डेमलर रीटरेन था। बाइक का निर्माण डेमलर ने अपने साथी विल्मेम मैबेक के साथ किया था। डेमलर की ओर यह साथी बाइक का नाम रीटरेन द्वारा बाबा बाइक नहीं जारी किया गया था। डेमलर ने साथी बाइक को लॉन्च किया था।

डेमलर की इस बाइक में इंजन की क्षमता 0.5 हॉर्स पावर की थी। यह बाइक 600 आरपीएम पर 11 किमी प्रति घण्टे की स्पीड से चलती थी। इस बाइक को साथी पहले 18 नवंबर 1885 को डेमलर के बैटे पॉल ने कैनररेटर से उटरेस्ट्रुक्युइम तक चलाया था।



के कारण सैलानियों को आकर्षित करती है।

पृथ्वी पर सबसे गहरी जगह - पृथ्वी की सबसे गहरी जगह मारिश तेलर से लगभग 10 घंटे लगते हैं। यह जगह समुद्र तल से लगभग 11 किलोमीटर गहरी है, और इसे चैलेंजर्स जीती जाता है। यह गहराई इतनी अधिक है कि यह एवरेस्ट पर्यावरण को इसमें उल्टा करके डाला जाए, तो उसका शीर्ष अभी भ



ओटीटी पर दिखेंगे सोशल मीडिया इंफ्लूएंसर अभिलाष थपलियाल

आज अभिलाष थपलियाल ने ऐडियो पर खबू नाम कमाया, लेकिन फिर उन्होंने ऐविटंग की तरफ लख किया और एपिटेट से लेकर फाफू तक में उनकी ऐविटंग को काफी पसंद किया गया। एस के सर के नाम से हर युवा उनका जानता है। अब अभिलाष ने ऐडियो से हटकर पूरी तरफ से ऐविटंग पर फोकस करने का फैसला किया है।

अभिलाष ने कहा रेडियो पर मैं जो कर रहा था वो बहुत ही रेयरल चीज़ ही गई थी। मतलब हर रोज़ वहां पर कुछ देना पड़ता था। मुझे लगता है कि आ वो समय आ गया है कि जहां पर ऐविटंग थोड़ा ज्यादा फोकस हो रही है। वो होता है कि जब आप 10 चीजें कर रखे होते हैं तो आपके पास एक भी चीज़ नहीं बचती। तो मैं वो नहीं बाहता हूं। इसलिए अभी पूरा फोकस ऐविटंग पर रखना चाहता हूं। ऐसा नहीं है कि मैंने रेडियो छोड़ा है लेकिन रेडियो से जितना सीखना था वो सीख लिया है। अब एक नया प्लैटफॉर्म है, तो आप कह सकते हैं कि मैं फ़ैक्टरी से बदल दी है।

अभिलाष ने कहा- कभी ऐसा फोकस नहीं था की ऐविटंग करनी है क्योंकि ट्रैड एक्टर तो हूं नहीं। हमेशा से रेडियो ही किया, उसके बाद बीच में कुछ पॉलिटिकल स्टार्टर किए थे। सोशल मीडिया पर मैंने मफलरमेन नाम का कैरेक्टर किया था, जो बहुत फैमस हुआ। उससे लोगों ने कहना शुरू किया थे तो पॉलिटिकल स्टार्टर (किसी खास शख्सियत की नकल करना)। उसके बाद किर मैंने कुछ वर्त दीवी पर कुछ शोज किए तो लोगों ने कहा कि दीवी होस्ट है। किर जब एपिटेट सीरीज़ आई और लोगों ने मुझे एस के सर के किरदार में पसंद किया, तब लोगों ने मुझे एक्टर कहना शुरू किया था। चीज़ तो बदलती ही रहती हैं। मुझे लगता है कि आज के समय में फेम पाना आसान है लेकिन क्रिएटिवी मुश्किल है।



यहां लोग बस आपको छोटा दिखाने की कोशिश करते हैं

बॉलीवुड की जानी-मानी अभिनेत्री ऋचा चहू़ा अक्सर बोकारो और बिंदास अंदाज के लिए जानी जाती हैं, लेकिन अभिनेत्री का कहना है कि वे हमेशा से ही ऐसी नहीं थीं। उन्होंने मुझे इंडियन फिल्म प्रोजेक्ट में आयोजित 15वें इंडियन फिल्म नंबर की वेबसीट पर बहुत सहजी होकर मैंने खुद से पूछा, मैंने ये फिल्म कब साइन की? मैं यहां देखा कर रही हूं? ये आइटम नंबर क्यों कर रही हूं?

उन्होंने एक किस्सा शेयर करते हुए बताया, एक डायरेक्टर ने मुझसे कहा कि मैं कोरियोग्राफर चाहिए और तुम्हें ऐसे-वैसे करने हैं। मैं अंदर से घरा जाती हूं कि ये लोग कौन हैं? मैं व्या कर रही हूं? मुझे समझ आया कि किसी लोकल मैनेजर ने थोड़े पैसे ले लिए होंगे और मुझे लगा होगा कि शायद वही करना चाहिए। यहीं इंडिया की तरीका है। अभिनेत्री ने बताया कि इस बीच इंस्ट्री में लोग मुझे भेजे लुक्स को टीक करने की सलाह देते थे। उन्होंने कहा, लोग कहते हैं, होटी टीक कराया लो, वेहरा टीक करायाओ, गाना शूट करने से पहले पानी मत पीना। मैं सब मान लेती थी। मैंने अपने शरीर और दिमाग को बहुत तकलीफ दी। मैं खुद से कहती थी, मैं बैंकर हूं, मैं अच्छी नहीं हूं। अभिनेत्री ने आखिर में कहा कि ये दुनिया है, यहां लोग बस करोंगी छोटा दिखाने की कोशिश करते हैं। हाल ही में अभिनेत्री ऋचा चहू़ा और अली फजल के प्रोडक्शन हाउस पूर्णिंग बंटन्स स्टूडियोज में बैंक फिल्म स्क्रीनिंग के 20वें वेनिस इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में वर्ल्ड प्रीमियर हुआ था।



फिल्मों और करियर पर खुलकर बोली अभिनेत्री राशी खन्ना

हाल ही में राशी खन्ना फिल्म 120 बहादुर में फ़ेरहान अख्तर के साथ नज़र आई। इस फिल्म में उन्होंने एक राजस्थानी किरदार निभाया, जिसे काफी सराहा गया। अलग-अलग भाषाओं की फिल्मों में काम करने के बाद अब वह लगातार नए और ऐवलिंग किरदारों की तलाश में हैं।

बातचीत में राशी ने अपने प्रोफेशनल सफर के बारे में विस्तार से बात की। उन्होंने बताया कि हर भाषा और संस्कृति को अपनाना उनके लिए कितना बुर्नीपूर्ण रहा। इसी बातचीत में उन्होंने टाइपकरिंग, स्क्रिप्ट सिलेक्शन और अपने फ्रीम रोल्स पर भी विवार साझा किए।

अलग-अलग भाषाओं और संस्कृतियों के किरदार निभाना कितना वैलेंजिंग किरदारों की ताकत या एसेट क्या है?

मुझे लगता है कि ये एक लेसिंग है कि मैं अलग-अलग भाषाओं और संस्कृतियों में किरदार निभानी हूं। ऐवलिंग भी रहता है क्योंकि आसान नहीं होता। लेकिन मेरा मानना है कि यहीं एक्टर होने का सबसे दिलचस्प हिस्सा है। जब मैं सेट पर पहले दिन जाती हूं तो मुझे थोड़ी नर्वसेस होती है।

क्योंकि आपको पता होता है कि आप पर प्रेसर हैं...सभी एक्टरों देना है, सभी इमोशन देना है और उस भाषा में ऑफेटिक लगाना भी जरूरी है।

एक एक्टर के तौर पर आपकी सबसे बड़ी ताकत या एसेट क्या है?

मुझे लगता है कि मेरी सबसे बड़ी ताकत यह है कि मैं दिल से आगे बढ़ती हूं, दिमाग से नहीं। मैं बहुत इमोशनल हूं और मुझे नहीं लगता कि यह नोटिव बात है। आज की दुनिया में इमोशनल फ़ील करना एक बड़ा ताकत हो सकती है। मेरी यही वर्ल्यूरेलिटी मुझे किरदारों के सब के करीब ले जाती है। मैं सिर्फ लोगों को ऑफर्ज नहीं करती, बल्कि उन्हें अब्जार्ड भी करती हूं। शायद यहीं मेरी सबसे बड़ी ताकत है।

जब आप कोई स्क्रिप्ट पढ़ती हैं तो सबसे पहले किस चीज़ पर ध्यान देती हैं?

जब मैं स्क्रिप्ट पढ़ती हूं तो सबसे पहले यह देखती हूं कि कहानी में स्वार्वी लिटनी है। इसके बाद किरदार पर ध्यान देती हूं। क्या उसकी आखों में दर्द है? क्या मैं उसकी जर्नी में महसूस कर पारही हूं? अगर सही जगह मैं हंस रही हूं और सही जगह रो रही हूं तो मेरे लिए वही सही स्क्रिप्ट होती है। मेरे जुर्मी होता है। हाल ही में इंटरनेशनल फिल्म फेरिटवल ऑफ इंडिया (ईपी) में राशी ने अपने कांतारा 2 के एक सीन की मिमिकी कर दी। उन्होंने कांथित तौर पर चाहुंडी (चामुंगा) देवी का मजाक बनाया। इसके बाद सोशल मीडिया पर उन्हें ट्रोल किया जा रहा है। दूसरी तरफ एक बाल चैप्टर 1 के एक सीन की नकल करने से जुर्मी है। हाल ही में इंटरनेशनल फिल्म फेरिटवल ऑफ इंडिया (ईपी) में राशी ने अपने कांतारा 3 में काम करने की जाताई ख्यालिंग।

एकत्र रणवीर सिंह अपनी आपनी फिल्म धूरंधर से पहले मुशीबत में घिर गए हैं। सोशल मीडिया पर उन्हें ट्रोल किया जा रहा है। दूसरे तरफ एक बाल चैप्टर 1 के एक सीन की नकल करने से जुर्मी है। हाल ही में इंटरनेशनल फिल्म फेरिटवल ऑफ इंडिया (ईपी) में राशी ने अपने कांतारा 2 के एक सीन की मिमिकी कर दी। उन्होंने कांथित तौर पर चाहुंडी (चामुंगा) देवी का मजाक बनाया। इसके बाद सोशल मीडिया पर उन्हें ट्रोल किया जा रहा है।

कांतारा 3 में काम करने की जाताई ख्यालिंग। वायरल वीडियो में राशीर एक्टर एकत्र रणवीर से कह रहे हैं, मैंने यह फिल्म शिएटर में देखी और आपकी परफॉर्मेंस बहुत ही शानदार लगी। खासकर वह सीन, जब वह बीच में काम करते हैं, व्यापक रूप से देखते हैं, यानि जाताई ख्यालिंग।

इसके बाद रणवीर उस सीन की नकल करते हैं। इसके बाद सोशल मीडिया पर उन्हें ट्रोल किया जा रहा है।

नेटिजन्स ने जाताई नाराजी रणवीर के इस वीडियो पर नेटिजन्स प्रतिक्रिया देते हुए अपनी आपने नाराजनके लिए जारी कर रहे हैं। और इसे अपनाकर देखते हैं, क्या यहीं अपने फैमिली करते हैं।

इसके बाद रणवीर उस सीन की नकल करते हैं। इसके बाद राशी करते हैं, लोगों से कहते हैं, व्यापक रूप से देखते हैं, यानि जाताई ख्यालिंग। इसके बाद रणवीर से कहते हैं, व्यापक रूप से देखते हैं, यानि जाताई ख्यालिंग।

जाताई नाराजी रणवीर के इस वीडियो पर नेटिजन्स प्रतिक्रिया देते हुए अपनी आपने नाराजनके लिए जारी कर रहे हैं। और इसे अपनानके बता रहे हैं। साथ ही कह रहे हैं कि उन्होंने ऐसा करके दैव का अपान किया है।



कांतारा के इस सीन की नकल करके बुरे फंसे रणवीर सिंह

शुक्रवार को एकत्र धनुष की फिल्म 'तेरे इश्क' में रिलीज हुई। इस रोमांसिंग बाला को फैस ने पसंद किया है। वीरे गुरुवार को भी फिल्म के प्रमोशन के लिए धनुष बनारस गए थे। यहां से कुछ तस्वीरें उन्होंने इस्टर्नम पर पोर्ट की। धनुष की पोर्ट पर मूर्णाल ठाकुर ने कमेंट करते हुए लिखा, 'क्या खूबसूरत सफर है।' मूर्णाल ने आगे फिल्म 'तेरे इश्क' को कल्प मूरी बताया। मूर्णाल के कमेंट के बाद से ही धनुष संग उनकी डेटिंग की अफवाहों को दोबारा बढ़ा मिली। यूज़न्स ने भी मूर्णाल ठाकुर के कमेंट को लाइक किया। बातें चले गए कि दुनिया है, यहां लोग बस करोंगी। इसके अलावा दोनों ही एक-दूसरे को सोशल मीडिया पर एपीशेष्ट करते हैं। धनुष की पर्सनल लाइफ की बात करें तो उनकी पहली शादी रजनीकांत की बड़ी ऐश्वर्या से हुई थी। लेकिन कुछ साल पहले दोनों का तलाक ह